Impact Factor – 6.625

ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International Multidisciplinary E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

December-2019 Special Issue – 210

साहित्य व्यवहाराचे बदलते स्वरूप

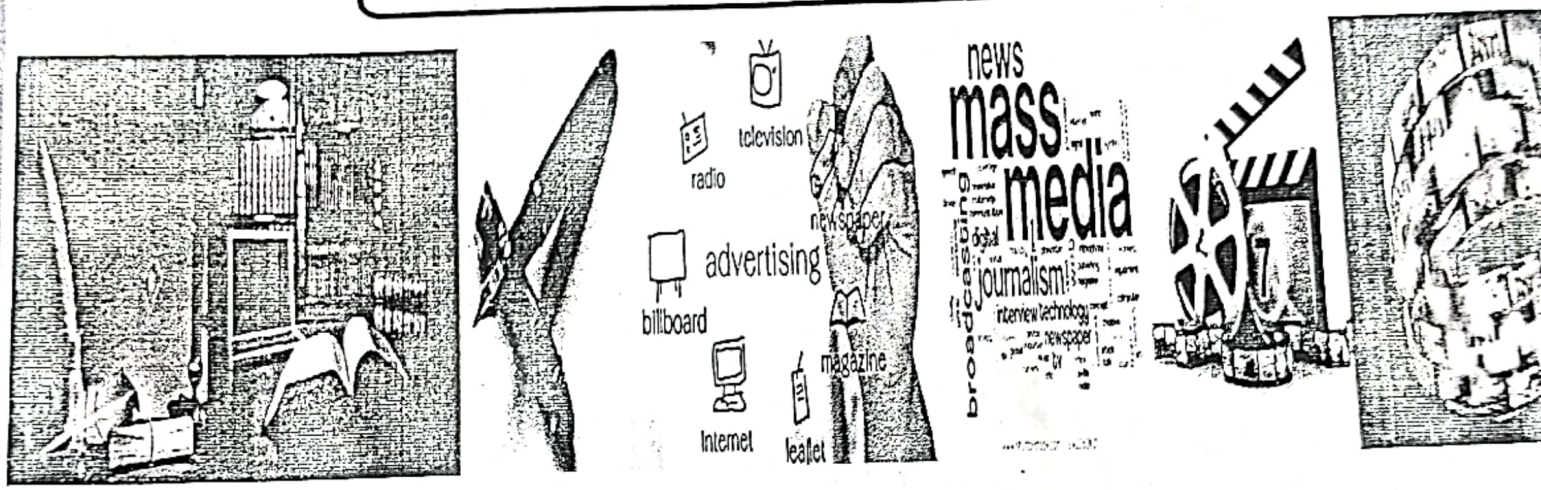

Guest Editor:
Dr. Bhausaheb Game,
Principal,
MGV's Arts & Commerce College, Yeola
Dist. Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editor of the issue:
Prof. Raghunath Wakle
Dr. Gajanan Bhamare
Prof. Sharad Chavhan

Chief Editor:
Dr. Dhanraj Dhangar

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Global Impact Factor (GIF)

Scanned with CamScanner

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E-Research Journal | ISSN : 2348-7143
Impact Factor - (SJIF) - 6.625, | December-2019
Special Issue 210 : साहित्य व्यवहारांचे बदलते स्वरूप
Peer Reviewed Journal

हिंदी काव्य साहित्य का परिवर्तित स्वरुप

प्रा. डॉ. अनिता नेरे
शोध निर्देशक, हिंदी विभाग,
म.स.गा.महाविद्यालय,मालेगांव कैंप (नाशिक)

प्रा. डॉ. योगिता अपूर्व हिरे
हिंदी विभागाध्यक्ष,
व्यंकटराव हिरे महाविद्यालय, पंचवटी, नाशिक

प्रास्ताविक :

हिंदी कविता का इतिहास बहुत पुराना है । साहित्य की इस लोकप्रिय विधा ने अपने को ढाला है । कविता मनुष्य की आदि सहयात्री है जिसमें बहुत बारीकी से उसके सुख-दुख, हर्ष-विषाद, समय की दस्तक तथा समाज के बड़े बदलाव और उथल-पुथल ही नहीं आत्मा की भीतरी गूँजें-अनुगूंजे भी सलाई रहती हैं । ऐसी आभ्यंतरिक आवाजें और मौन में बहता हृदया का संगीत भी जिन्हे सुनने की फुर्सत इस भीड़-बाड़ वाली जल्दबाज दुनिया में शायद किसी को नहीं है । इसीलिए कविता कुछ देर के लिए हमें ठिठककर सोचने और एक नई अर्थभूमि पर आकर अपनी सीमा पर, सार्थकता पर विचार करने के लिए विवश करती है । हिंदी कविता आधुनिक युगम में आकर हुमुखी विकास कर पाई है । आज कविता अपनी सीमाओं के बावजूद संभावनाओं से भरी हुई है । इन कविताओं में आम आदमी की धड़कन सुनाई देती है । कविता के माध्यम से कवि जीवनानुभवों को सरलता और स्पष्टता से समाज के समक्ष प्रस्तुत करता है । कविता सही अर्थों में अपने समय का दर्शन और दर्पण होती है ।

हिंदी काव्य साहित्य का परिवर्तित स्वरुप :

हिंदी काव्य साहित्य की परंपरा अत्यंत सुदृढ और व्यापक है । हिंदी कविता का मूल स्वर संवेदनात्मक है । यद्यपि कविता का स्वरुप आनादिकाल से पद्य रहा है । कविताने संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश सभी भाषाओं को अपनाकर अपनी आवश्यकता सिध्द की है । सिध्दों, नाथों, जैनों और बौध्दों ने कविता के माध्यम से ही समाज प्रबोधन किया । आदिकाल में डिंगल-पिंगल भाषा में हिंदी कविता वीर और शृंगार रस का परिपाक करती रही । कवि जयदेव, विद्यापति, अमीर खुसरो आदि ने भारतीय जममानस की अभिव्यक्ति को कविता द्वारा वाणी दी ।.तो चारण कवियों ने राजा-महाराजाओं के शौर्य और प्रताप को वीर रसपूर्ण कविताओं के माध्यम से राष्ट्रप्रेम और राष्ट्रभक्ति के साथ जोड़ा । भकति-काल हिंदी कविता का स्वर्णयुग रहा है । कबीर, रैदास, धन्ना, पीपा, तुलसी, आर्यसी, सूर, मीराबाई आदि सभी कवियों ने पतन की खाई में धसते भारतीय समाज को सही राह बताने हा महान कार्य किया । कबीर ने जात-पाँत के भेद धार्मिक पाखंड, अंधरुढियाँ, अनिष्ट परंपराएँ सभी का कविता के द्वारा जमकर विरोध किया । वही संत रैदास ने समता, एकता और भाईचारे को अपनी कविताओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया । आज के रामराज्य की कल्पना का मूल उत्स हमें संत रैदास की कविताये में मिलता है । वे लिखते हैं, -

"ऐसा चाहूँ मैं राज, जहाँ मिले सबन को अन्न ।
छोटो-बड़ो सब सम रहें, रैदास रहें प्रसन्न ।।"

रीतिकाल की कविताएँ शृंगार रस से ओत-प्रोत है । साथ ही इनमें भक्ति, नीति, रीति, तत्व भी मौजूद है । भारतेंदु युग काव्य साहित्य का परिवर्तित काल माना जाता है । भारतेंदु, हरिश्चंद्र और उनके संपादक मित्रों ने कविता को राज दरबार से उठाकर आम आदमी के जीवन के साथ जोड़ा । कविता में पहली बार भाषा स्तर पर भी परिवर्तन हुआ । कविता में ब्रज भाषा के साथ ही खड़ीबोली हिंदी का प्रयोग होने लगा । आगे द्विवेदी युग, छायावाद, राष्ट्रीय चेतना की कविता, प्रयोगवाद, प्रगतिवाद, हालावाद, नेकनवाद, समकालीन कविता, साठोत्तरी कविता, अ कविता, ब कविता विचार कविता, सहज कविता, हास्य कविता, गीत-नवगीत-अनुगीत

Scanned with CamScanner

काव्य धारा आदि कई काव्य आंदोलन आज़ादी के बाद प्रारंभ हुए। महाकवि निराला ने कविता को पहली बार छंदों के बंधन से तोड़ा और मुक्त छंद की कविता लिखना प्रारंभ किया। निराला की 'जुही की कली' कविता नया जीवनानुभव नया मिज़ाज औक नए काव्य-मुहावरें लेकर आयी। यह कविता नए सौंदर्य बोध, नई काव्य भाषा और नवीन शिल्प को चित्रित करती हैं। निराला के काव्य वैविध्य के संदर्भ में डॉ.रामस्वरुप चतुर्वेदी लिखते हैं, "यह वह विलक्षण बात हैं कि उनके काव्य में क्लासिकी रोमांटिक तथा आधुनिक तत्व एक साथ दिखाई देते हैं। निराला में प्रसाद-निराला, अज्ञेय तीनों घुले-मिले हैं। मुक्त धंद और छंद- और छंद-बध्द 'राम की शक्ति-पूजा' और 'कुकुर मुत्ता' तत्सम-तद्भव-देसी, प्रबंध-गीत-मुक्तक-विधान-काव्य भाषा और बंध के इन विविध स्तरों पर निराला समान क्षमता के साथ सक्रिय हैं। इतने स्तरों पर ऐसा वैविध्य अन्यत्र दुर्लभ है।"(1)

कवि हरिवंश राय बच्चन, नलिन विलोचन शर्मा, नरेश मेहता, प्रसाद पंत, महादेवी, अज्ञेय, मुक्तिबोध, कवि रघुवीर सहाय, बाबा नागार्जुन, जनवादी चेतना के कवि धुमिल, धर्मवीर भारती आदि अनेक कवियों ने तत्कालिन समाज का नया रुप, नई समस्याएँ और नई उमंगों को नई भावाभिव्यक्ति के साथ कविता में मुखर किया।

कवि 'अज्ञेय' ने कविता क्षेत्र में'सप्तकों' द्वारा नवनवीन प्रयोग किये। इस युग की कविता में प्रकृति, नारी, कामवासना आदि विभिन्न विषयों का त्याग करके नवीन और साधारण से साधारण विषयों के लिए कविता के द्वार खोले गये। डॉ.रामेश्वर खण्डेलवाल इस संदर्भ में लिखते हैं, "प्रयोगवादी कविता का शिल्प अत्यन्त विकसित हुआ। उसका शब्द प्रयोग, अप्रस्तुत विधान और बिम्ब विधान अधिक व्यंजक है। नये प्रतीक और अप्रस्तुत विधाओं का चयन कवि वि5न द्वारा आविस्कृत सुपरिचित यं6, उपकरणों अथवा सुख-सुविधा के साधनों से करते हैं।"(2) इसी समय धर्मवीर बारती ने काव्य और नाच्य शैली मिश्रित रुप में आधुनिक युग का अत्यंत समर्थ काव्य-नाटक 'अन्धा-युग' भी प्रस्तुत किया, जो काव्य का पूर्णत: नवीन और परिवर्तित रुप था। गजानन माधव मुक्तिबोध की कविता में जीवन के प्रति व्यापक दृष्टिकोण पर आधारित स्वस्थ सामाजिकता तथा लोकमंगल की बावना दृष्टिगत हुई।

बीसवीं शती के उत्तरार्ध्द में जन्मी कविता नई कविता कहलाती। उदारमतवाद और मुक्त आर्थिक धोरक के कारण कविता में भी क्षणभंगुरता, शुन्यता, अतावादीता, आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता आदि के कारण निर्माण समस्याओं को बयान किया गया। बीसवीं सदी तक आते-आते कविता ने अनेक विमर्शओं का निर्माण किया। बाज़ारवाद, भूमण्डलीकरण और मीडिया का प्रभाव कविता पर परिलक्षित हुआ। इसलिए हर तवके का आदमी अपनी जीवन की पीड़ा, दुख, दर्द, व्यथा, कथा और संघर्ष कविता के माध्यम से बयान करने लालायित रहा। इसमें दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, आदिवासी विमर्श, अल्पसंख्याक विमर्श, कृषक विमर्श, विकलांग विमर्श, किन्नर विमर्श, आदि अन्योन्य विर्मशों को कविता में स्थान मिला। इन विमर्शकारों ने अपने भोगे हुए जीवन अनुभवों को नयी शैली, नये उपमान औरनये आक्रोश के साथ समाज के सामने प्रस्तुत किया। डॉ.राजेंद्र भट्ट वर्तमान कविता के परिवर्तित स्वरुप को अधोरेखित करते हुए लिखते हैं, "वर्तमान कविता में भावनाओं को प्राथमिकता मिली हैं। इनमें आम जन का दर्द, अव्यवस्था पर तीखा प्रहार दिखाई देता है। शोपितों-पीड़ितों की बुलंद आवाज़ सुनाई देती है। इसमें आम आदमी का प्रतिबिंब हे जौ दमन और अत्याचार का शिकार है। उपेक्षित और तिरस्कृत है। आत्मीय-संघर्ष, मानवीय करुणा, जनपक्षधरता की मनोवृत्ति को प्रत्यक्ष रुप में लाना कविता की मांग है।"(3) आज छंद और लय के नए-नए प्रयोग हो रहे हैं। शिल्प में परिवर्तन हुआ है, जिससे कविता की भाषा में सहजता आई है।

प्रथम दशक की कविताओं में जीवन के भन्न कलेवर विद्यमान है। जीवन के राग-विराग से लेकर असहमति के साहस तक पैली ये कविताएँ जीवन के बहुत से जडिल प्रश्नों, प्रसंगों और आज के मनुष्य के आगे चुनौती पैदा करने वाली समस्याओं पर खुलकर अपनी राय रख रही हैं। आज कविता में सबसे वरिष्ठ पीढ़ी के कवियों में ज्ञानेंद्रपति, रामदशश मिश्र, अरुण कमल, राजकुमार कुंभज, प्रकाश मनु, सुशांत सुप्रिय आदि चर्चित है। श्याम सुशील की कविता 'आएंगे अच्छे दिन' कविता अपने आप नें बहुत कुछ कह जाती है। कवि कहते हैं, "आएंगे अच्छे दिव / लिखेंगे हम भी अच्छी कविताएँ / एक भली दुनिया के गीत हम गाएंगे / अभी गम अंधेरे में घिरे हैं / धरती की कोख में पड़े हुए बीज हम / कह नहीं सकते संघर्ष यग कब तक चले / मगर विश्वास है कि उभ-चूभ उभरेंगे / सांसत के दिनो से उबरेंगे एक दिन।"(4) इन कवियों ने विचार, शिल्प और कला के स्तर पर

Scanned with CamScanner

बहुआयामी यो देकर कविता को समृध्द किया है । आज की कविता में भाषा के कई रुप, कई आवाज़े शामिल हो रही है । आज की कविता में भाषा के कई रुप, कई आवाज़े शामिल हो रही हैं जो पहले नहीं सुनी गई थी । कविता वहा जाती दख पड़ती है, जहाँ वह पहले कभी नहीं गई थी ।

प्रथम दशक के बाद अर्थात 2011 से कवि हिंदी काव्य साहित्य का बेहद वैविध्यपूर्ण रुप दृष्टिगोचर हुआ है.। आज युवा कवियों की चुनिंदा और विविधता से युक्त कविता का संकलन 'पगला युवा द्वादश' के नाम से प्रसिद्ध है । इस संचलन में संजय माधुर, प्रदीप जिलवाने, कुमार विनोद, कमलेश्वर साहू, जितेंद्र चौहान आदि कवि सम्मिलित है । कवि प्रदीप जिलवाने की कविताएँ हमारे समय में कथ्य, शिल्प और संवेदनाओं का ऐसा पारदर्शी संसार खड़ा करती है, जिसमें हम अपने समाज का दर्द देख सके और उसके आर-पार जाकर आम आदमी की 'पगडडी से पक्की सड़क' छ इसमें वे लिखते है, "बेटियाँ सीखती हैं माँ से ही / जो उसने अपनी माँ से और / उसकी माँ ने अपनी माँ से सीखा /इस तरह चला आ रहा है परंपरा का य पगडंडी से पक्की सड़क बनने का सफर ।"(5)

कवि बुध्दिलाल पल की कविताओं का तेवर भी अत्यंत सक्त है । उनकी कविता हमारे समय की विसंगतियों, शोषम, वर्गभेद और गैरबराबरी को परिभाषित करती हैं। वे लिखते हैं, "राजा और राक्षस में / फर्क सिर्फ इतना / राक्षस के सींग / दिखाई देते हैं / राजा के नहीं ।"(6)

पहले युवा द्वादशक के बाद दूसरा, तिसरा, चौथा और पांचवा युवा द्वादश भी की कविताएँ भी प्रकाशित हो चुकी हैं । इन कविताओं कहीं लोकभाषा कीं प्रतिविंब है तो कही अपने स्थानीय परिवेश और वैश्विक चिंताए भी मौजूद है । इन कविताओं में भूमंडलीकरण और बाज़ारवाद के परिणाम भी चित्रित हुए है । युवा कवियित्री स्वरांगी साने की कविताएँ भारतीय स्त्री का वह संसार है जो घर-गृहस्थी से लेकर उसके नजी दु:ख-सुख तक फैली है । उनकी कविताएँ उस निम्न और मध्यमवर्गीय स्त्री की वेदना है जो आज भी अपनी आर्थिक, दैहिक और सामाजिक स्वाधीनता के लिए संघर्षरत है । ले लिखती हैं, "समझदार लड़कियाँ जानी जाती हैं / समझदार लड़कियों की तरह / वे कभी नहीं करती प्रेम / और कर लें तो दफ़ना देती हैं दिल के तहखाने में / समझदार लड़कियाँ / आजन्म भुगतती हैं समझदारी ।"(7) वर्तमान हिंदी कविताएँ अत्यंत घनीभूत संवेदनाओं को अपने में समेटे ऐसी कविताएँ जिनके सरोकार बहुत व्यापक हैं ।

RESEARCH JOURNEY

निष्कर्ष :

सारांश रुप में कहाजा सकता है कि हिंदी काव्य साहित्य में समयानुसार वैविध्य मौजूद है । हिंदी कविता अपने युग के हर आदमी का संत्रास अभिव्यक्त करती है । इनमें विविधताओं का इंद्रधनुष्य है, स्वप्नबोध और मानवीय मूल्यों के प्रति गहरी आस्थआ है । ये कविताएँ समय के बदलाव को गहराई से पहचानकर समस्याओं को रेखांकित करके उनका हल ढूँढती है । आज कि हिंदी कविता विभिन्न विवादों से घीरी होने का बावजूद भी मनुष्य को मनुष्य की पहचान कराती है और समाज को खुली किताब के रुप में पेश करती है ।

-----****-----

Scanned with CamScanner